''मेघदूत में दाम्पत्य प्रेम की सम्वेदनशील भावुकत्ता''

डॉ आमोद कुमार पाण्डेय

''मेघदूत के संदर्भ में ''यक्ष जानता है यक्षिणी उसका दूसरा प्राण ही है। यक्षिणी ही उसका जीवन है जो शरीरान्तर में संक्रमित मात्र है, बस। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के लिए तभी प्रण हो जाता है, जब वह अपनी आत्मा में उसकी आत्मा का प्रतिबिम्ब पा जाता है।'' मेघदूत में माहकवि कालिदास ने जिस नारी का चित्रण किए है वह अपने पति की आत्मा का ही एक अभंगूर अचल प्रतिबिम्ब है। चकवा–चकई के समान दोनों परस्परासक्त है।

मेघदूत की यक्षिणी एक गृहणी और पतिव्रता नारी के रूप में चित्रित की गई है–''मदगेहिन्याः प्रिय इति सखे चेतसाकातरेण'' (उ0मे0 24) जिनके हृदय में अपने भर्त्ता का अविकल प्रतिबिम्ब पड़ता है वे स्त्रियाँ पतिव्रता होती है। भारतीय पत्नी है जो पति के हंसने पर हंसती है, रोने पर रोती है, क्षीण होने पर क्षीण हो जाती है और मरने पर मर जाती है। यक्ष की भार्या पति के साथ नहीं रहने के कारण श्रृंगार का परित्याग कर दी हैं, जमीन पर सोती है, रात–रात भर जागती है। इस प्रकार विरहिणी उस पतिव्रता नारी ने अपने मनः संकल्पो द्वारा दूरवर्ती पति की एकतानुभूति के लिए पति के अंगो में अपने अंगो को संक्रान्त कर दिया है। ''गाढ़ोत्कंठा गुरूषु दिवसेष्वेषुगच्छत्सु बालाम'' (उ0मे020) अतएवं प्रणय कोष में बड़ी दक्ष है, बहुत कम बोलती है और कम सोती है, एवं निरन्तर अपने पति के अनुकूल रहती है ऐसी पत्नी को पाकर किसी को भी अपने को सौभाग्यशाली समझना स्वाभाविक है।